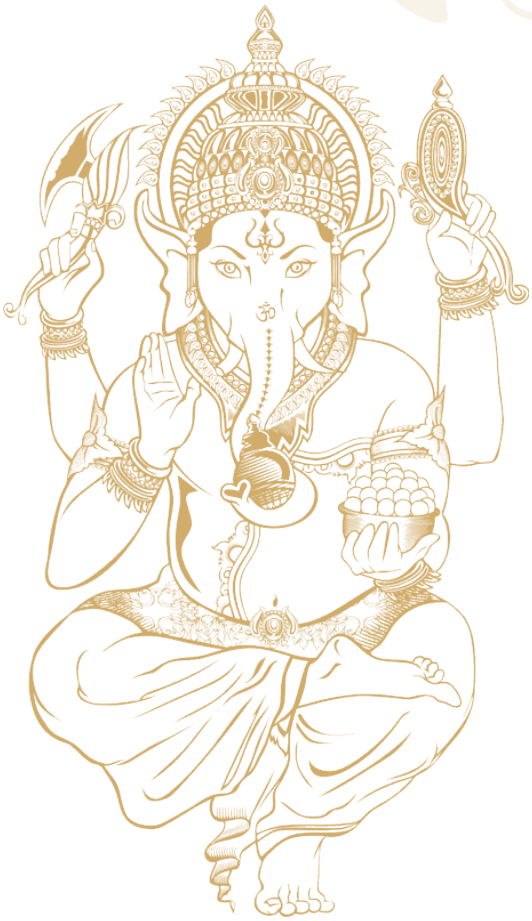

# Priyanka

10 Feb 1986

07:35 AM

Howrah

Model: Web-MyKundli

Order No: 120825401

# सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

| | |
|---|---|
| लिंग | स्त्रीलिंग |
| **जन्म तिथि** | **10/02/1986** |
| दिन | सोमवार |
| **जन्म समय** | **07:35:00 घंटे** |
| इष्ट | 03:27:23 घटी |
| **स्थान** | **Howrah** |
| राज्य | West Bengal |
| देश | India |

| | |
|---|---|
| अक्षांश | 22:35:00 उत्तर |
| रेखांश | 88:20:00 पूर्व |
| मध्य रेखांश | 82:30:00 पूर्व |
| स्थानिक संस्कार | 00:23:20 घंटे |
| ग्रीष्म संस्कार | 00:00:00 घंटे |
| स्थानिक समय | 07:58:20 घंटे |
| वेलान्तर | -00:14:18 घंटे |
| साम्पातिक काल | 17:17:47 घंटे |
| सूर्योदय | 06:12:02 घंटे |
| सूर्यास्त | 17:30:00 घंटे |
| दिनमान | 11:17:58 घंटे |
| सूर्य स्थिति(अयन) | उत्तरायण |
| सूर्य स्थिति(गोल) | दक्षिण |
| ऋतु | शिशिर |
| सूर्य के अंश | 27:22:34 मकर |
| लग्न के अंश | 22:22:20 कुम्भ |

**अवकहड़ा चक्र**

| | |
|---|---|
| लग्न-लग्नाधिपति | कुम्भ - शनि |
| **राशि-स्वामी** | **कुम्भ - शनि** |
| **नक्षत्र-चरण** | **शतभिषा - 2** |
| नक्षत्र स्वामी | राहु |
| योग | परिघ |
| करण | बालव |
| गण | राक्षस |
| योनि | अश्व |
| नाड़ी | आद्य |
| वर्ण | शूद्र |
| वश्य | मानव |
| वर्ग | मेष |
| युँजा | अन्त्य |
| हंसक | वायु |
| जन्म नामाक्षर | सा-सपना |
| पाया(राशि-नक्षत्र) | स्वर्ण - ताम्र |
| सूर्य राशि(पाश्चात्य) | कुम्भ |

# पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

| कैलेंडर | वर्ष | मास | तिथि/प्रविष्टे |
|---|---|---|---|
| राष्ट्रीय | शक : 1907 | माघ | 21 |
| पंजाबी | संवत : 2042 | माघ | 28 |
| बंगाली | सन् : 1392 | माघ | 27 |
| तमिल | संवत : 2042 | थई | 28 |
| केरल | कोल्लम : 1161 | मकरम | 28 |
| नेपाली | संवत : 2042 | माघ | 28 |
| चैत्रादि | संवत : 2042 | माघ | शुक्ल 2 |
| कार्तिकादि | संवत : 2042 | माघ | शुक्ल 2 |

**पंचांग**

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 2
तिथि समाप्ति काल _____: 28:42:21
जन्म तिथि _____: 2
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: शतभिषा
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 24:34:07 घंटे
जन्म योग _____: शतभिषा
सूर्योदय कालीन योग ____: परिघ
योग समाप्ति काल _____: 16:33:20 घंटे
जन्म योग _____: परिघ
सूर्योदय कालीन करण ____: बालव
करण समाप्ति काल _____: 16:53:55 घंटे
जन्म करण _____: बालव
भयात _____: 17:25:10
भभोग _____: 59:52:57
भोग्य दशा काल _____: राहु 12 वर्ष 8 मा 17 दि

**घात चक्र**

मास _____: चैत्र
तिथि _____: 3-8-13
दिन _____: गुरुवार
नक्षत्र _____: आर्द्रा
योग _____: गण्ड
करण _____: किंस्तुघ्न
प्रहर _____: 3
वर्ग _____: श्वान
लग्न _____: मिथुन
सूर्य _____: वृष
चन्द्र _____: मिथुन
मंगल _____: मिथुन
बुध _____: वृष
गुरु _____: कर्क
शुक्र _____: सिंह
शनि _____: मेष
राहु _____: कन्या

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुंडली

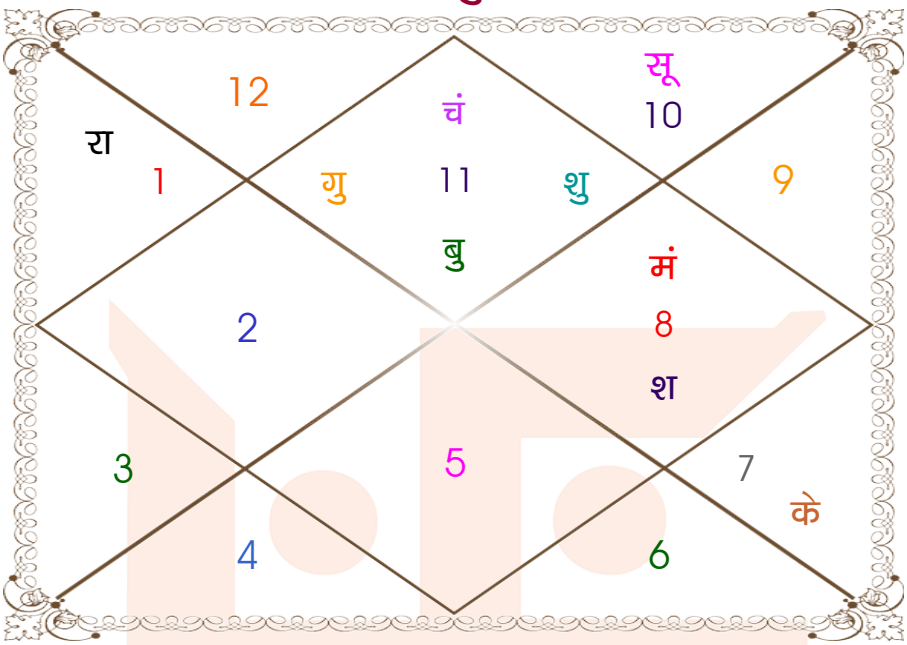


## चन्द्र कुंडली

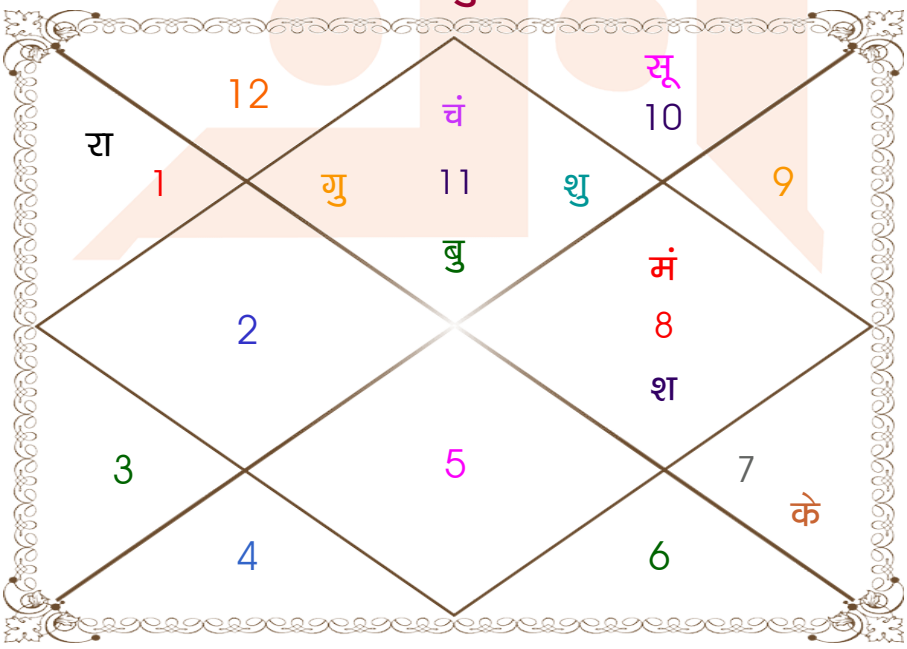

# लग्न कुण्डली और दशा

## लग्न कुंडली

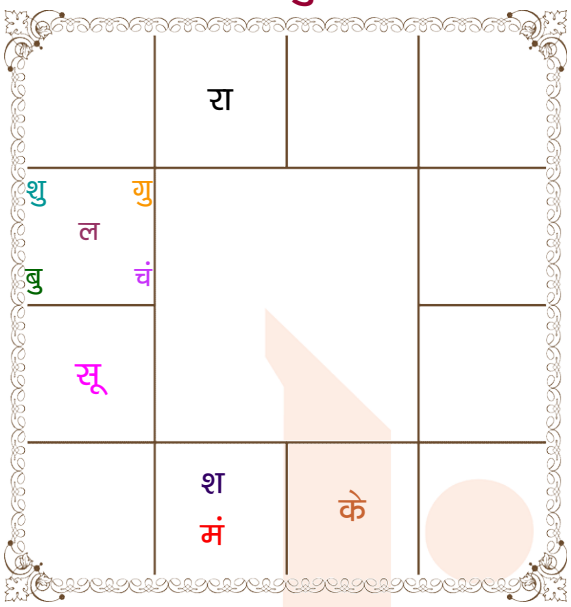


## लग्न कुंडली

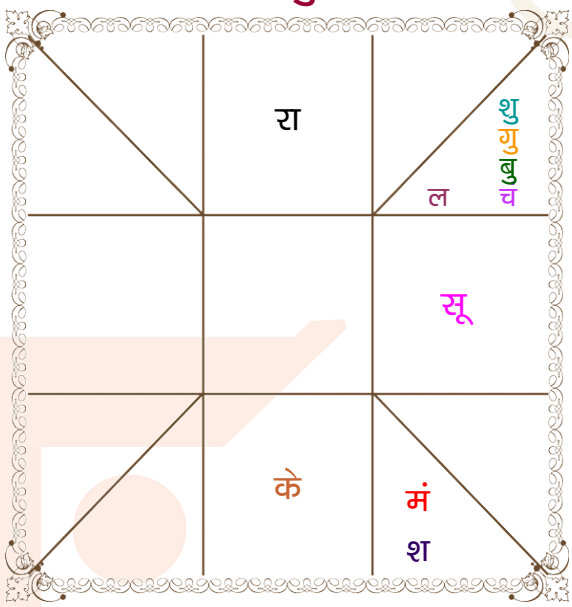


### विंशोत्तरी
### राहु 12वर्ष 8मा 17दि

**राहु**

**10/02/1986**

**30/10/2100**

| | |
|---|---|
| राहु | 29/10/1998 |
| गुरु | 29/10/2014 |
| शनि | 29/10/2033 |
| बुध | 29/10/2050 |
| केतु | 29/10/2057 |
| शुक्र | 29/10/2077 |
| सूर्य | 29/10/2083 |
| चन्द्र | 29/10/2093 |
| मंगल | 30/10/2100 |

### योगिनी
### धान्या 2वर्ष 1मा 13दि

**भ्रामरी**

**25/03/2024**

**25/03/2028**

| | |
|---|---|
| भ्रामरी | 03/09/2024 |
| भद्रिका | 25/03/2025 |
| उल्का | 24/11/2025 |
| सिद्धा | 04/09/2026 |
| संकटा | 25/07/2027 |
| मंगला | 04/09/2027 |
| पिंगला | 24/11/2027 |
| धान्या | 25/03/2028 |

# ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

| ग्रह | व | अ | राशि | अंश | गति | नक्षत्र | पद | नं. | रा | न | अं. | स्थिति |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लग्न | | | कुंभ | 22:22:20 | 473:19:11 | पू०भाद्रपद | 1 | 25 | शनि | गुरु | शनि | --- |
| सूर्य | | | मक | 27:22:34 | 01:00:45 | धनिष्ठा | 2 | 23 | शनि | मंगल | गुरु | शत्रु राशि |
| चंद्र | | | कुंभ | 10:34:53 | 13:26:01 | शतभिषा | 2 | 24 | शनि | राहु | शनि | सम राशि |
| मंगल | | | वृश्चि | 10:56:03 | 00:35:02 | अनुराधा | 3 | 17 | मंगल | शनि | सूर्य | स्वराशि |
| बुध | | अ | कुंभ | 04:16:23 | 01:48:56 | धनिष्ठा | 4 | 23 | शनि | मंगल | शुक्र | सम राशि |
| गुरु | | अ | कुंभ | 03:47:52 | 00:14:23 | धनिष्ठा | 4 | 23 | शनि | मंगल | शुक्र | सम राशि |
| शुक्र | | अ | कुंभ | 02:31:18 | 01:15:14 | धनिष्ठा | 3 | 23 | शनि | मंगल | केतु | मित्र राशि |
| शनि | | | वृश्चि | 14:53:34 | 00:03:36 | अनुराधा | 4 | 17 | मंगल | शनि | गुरु | शत्रु राशि |
| राहु | व | | मेष | 08:58:51 | 00:10:44 | अश्विनी | 3 | 1 | मंगल | केतु | गुरु | शत्रु राशि |
| केतु | व | | तुला | 08:58:51 | 00:10:44 | स्वाति | 1 | 15 | शुक्र | राहु | गुरु | सम राशि |
| हर्ष | | | वृश्चि | 27:49:20 | 00:02:16 | ज्येष्ठा | 4 | 18 | मंगल | बुध | गुरु | --- |
| नेप | | | धनु | 11:17:48 | 00:01:43 | मूल | 4 | 19 | गुरु | केतु | शनि | --- |
| प्लूटो | व | | तुला | 13:42:05 | 00:00:03 | स्वाति | 3 | 15 | शुक्र | राहु | बुध | --- |
| दशम भाव | | | वृश्चि | 26:38:20 | -- | ज्येष्ठा | -- | 18 | मंगल | बुध | गुरु | -- |

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

**चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:39:39

## लग्न-चलित

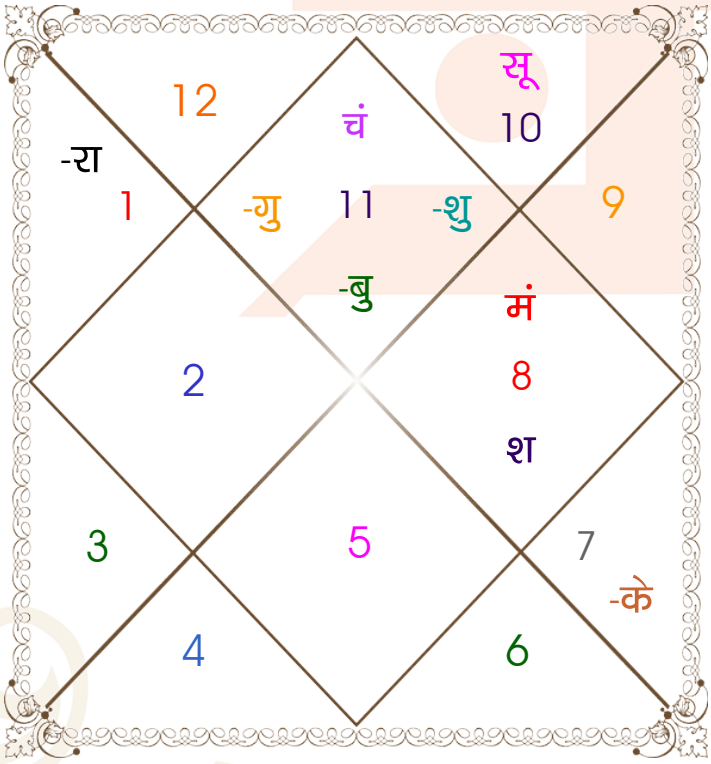


## चन्द्र कुंडली

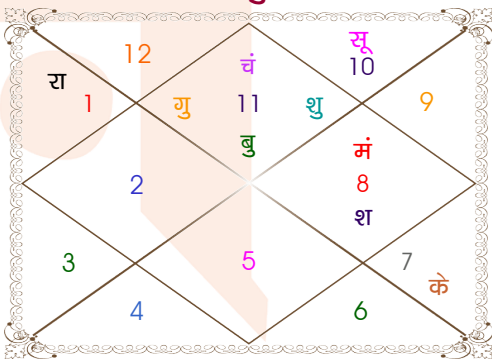


## नवमांश कुंडली

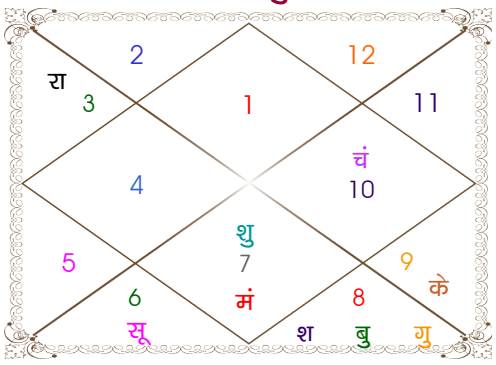

# चलित तथा निरयण भाव चलित

## चलित अंश

| भाव | भाव संधि | | भाव मध्य | |
|---|---|---|---|---|
| 1 | कुम्भ | 08:05:00 | कुम्भ | 22:22:20 |
| 2 | मीन | 08:05:00 | मीन | 23:47:40 |
| 3 | मेष | 09:30:20 | मेष | 25:13:00 |
| 4 | वृष | 10:55:40 | वृष | 26:38:20 |
| 5 | मिथुन | 10:55:40 | मिथुन | 25:13:00 |
| 6 | कर्क | 09:30:20 | कर्क | 23:47:40 |
| 7 | सिंह | 08:05:00 | सिंह | 22:22:20 |
| 8 | कन्या | 08:05:00 | कन्या | 23:47:40 |
| 9 | तुला | 09:30:20 | तुला | 25:13:00 |
| 10 | वृश्चिक | 10:55:40 | वृश्चिक | 26:38:20 |
| 11 | धनु | 10:55:40 | धनु | 25:13:00 |
| 12 | मकर | 09:30:20 | मकर | 23:47:40 |

## निरयण भाव चलित

| भाव | राशि | अंश |
|---|---|---|
| 1 | कुम्भ | 22:22:20 |
| 2 | मेष | 00:08:27 |
| 3 | वृष | 00:52:41 |
| 4 | वृष | 26:38:20 |
| 5 | मिथुन | 21:11:22 |
| 6 | कर्क | 18:23:46 |
| 7 | सिंह | 22:22:20 |
| 8 | तुला | 00:08:27 |
| 9 | वृश्चिक | 00:52:41 |
| 10 | वृश्चिक | 26:38:20 |
| 11 | धनु | 21:11:22 |
| 12 | मकर | 18:23:46 |

## तारा चक्र

| जन्म | सम्पत | विपत | क्षेम | प्रत्यारि | साधक | वध | मित्र | अतिमित्र |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शतभिषा | पू०भाद्रपद | उ०भाद्रपद | रेवती | अश्विनी | भरणी | कृतिका | रोहिणी | मृगशिरा |
| आर्द्रा | पुनर्वसु | पुष्य | आश्लेषा | मघा | पू०फाल्गुनी | उ०फाल्गुनी | हस्त | चित्रा |
| स्वाति | विशाखा | अनुराधा | ज्येष्ठा | मूल | पूर्वाषाढ़ा | उत्तराषाढ़ा | श्रवण | धनिष्ठा |

## चलित कुंडली

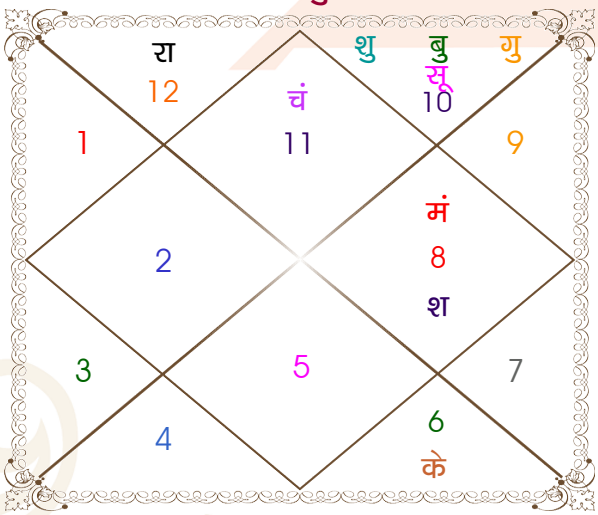


## भाव कुंडली

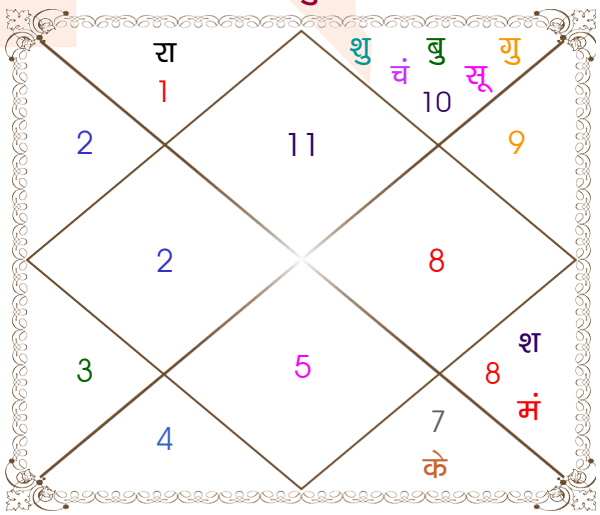

# विंशोत्तरी दशा

## भोग्य दशा काल : राहु 12 वर्ष 8 मास 17 दिन

| राहु 18 वर्ष | | गुरु 16 वर्ष | | शनि 19 वर्ष | | बुध 17 वर्ष | | केतु 7 वर्ष | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 10/02/1986 | | 29/10/1998 | | 29/10/2014 | | 29/10/2033 | | 29/10/2050 | |
| 29/10/1998 | | 29/10/2014 | | 29/10/2033 | | 29/10/2050 | | 29/10/2057 | |
| | 00/00/0000 | गुरु | 16/12/2000 | शनि | 01/11/2017 | बुध | 26/03/2036 | केतु | 27/03/2051 |
| | 10/02/1986 | शनि | 30/06/2003 | बुध | 11/07/2020 | केतु | 24/03/2037 | शुक्र | 26/05/2052 |
| शनि | 10/10/1988 | बुध | 04/10/2005 | केतु | 20/08/2021 | शुक्र | 23/01/2040 | सूर्य | 01/10/2052 |
| बुध | 30/04/1991 | केतु | 10/09/2006 | शुक्र | 19/10/2024 | सूर्य | 28/11/2040 | चंद्र | 02/05/2053 |
| केतु | 17/05/1992 | शुक्र | 11/05/2009 | सूर्य | 01/10/2025 | चंद्र | 29/04/2042 | मंगल | 28/09/2053 |
| शुक्र | 18/05/1995 | सूर्य | 28/02/2010 | चंद्र | 03/05/2027 | मंगल | 27/04/2043 | राहु | 17/10/2054 |
| सूर्य | 11/04/1996 | चंद्र | 30/06/2011 | मंगल | 11/06/2028 | राहु | 13/11/2045 | गुरु | 23/09/2055 |
| चंद्र | 11/10/1997 | मंगल | 04/06/2012 | राहु | 18/04/2031 | गुरु | 19/02/2048 | शनि | 01/11/2056 |
| मंगल | 29/10/1998 | राहु | 29/10/2014 | गुरु | 29/10/2033 | शनि | 29/10/2050 | बुध | 29/10/2057 |

| शुक्र 20 वर्ष | | सूर्य 6 वर्ष | | चंद्र 10 वर्ष | | मंगल 7 वर्ष | | राहु 18 वर्ष | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 29/10/2057 | | 29/10/2077 | | 29/10/2083 | | 29/10/2093 | | 30/10/2100 | |
| 29/10/2077 | | 29/10/2083 | | 29/10/2093 | | 30/10/2100 | | 00/00/0000 | |
| शुक्र | 27/02/2061 | सूर्य | 15/02/2078 | चंद्र | 29/08/2084 | मंगल | 27/03/2094 | राहु | 13/07/2103 |
| सूर्य | 28/02/2062 | चंद्र | 17/08/2078 | मंगल | 30/03/2085 | राहु | 14/04/2095 | गुरु | 05/12/2105 |
| चंद्र | 29/10/2063 | मंगल | 23/12/2078 | राहु | 29/09/2086 | गुरु | 20/03/2096 | शनि | 11/02/2106 |
| मंगल | 28/12/2064 | राहु | 17/11/2079 | गुरु | 29/01/2088 | शनि | 29/04/2097 | | 00/00/0000 |
| राहु | 29/12/2067 | गुरु | 04/09/2080 | शनि | 29/08/2089 | बुध | 26/04/2098 | | 00/00/0000 |
| गुरु | 29/08/2070 | शनि | 17/08/2081 | बुध | 28/01/2091 | केतु | 23/09/2098 | | 00/00/0000 |
| शनि | 29/10/2073 | बुध | 23/06/2082 | केतु | 29/08/2091 | शुक्र | 23/11/2099 | | 00/00/0000 |
| बुध | 29/08/2076 | केतु | 29/10/2082 | शुक्र | 29/04/2093 | सूर्य | 31/03/2100 | | 00/00/0000 |
| केतु | 29/10/2077 | शुक्र | 29/10/2083 | सूर्य | 29/10/2093 | चंद्र | 30/10/2100 | | 00/00/0000 |

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल राहु 12 वर्ष 9 मा 5 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

# विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

| शनि - चंद्र | | शनि - मंगल | | शनि - राहु | | शनि - गुरु | | बुध - बुध | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 01/10/2025 | | 03/05/2027 | | 11/06/2028 | | 18/04/2031 | | 29/10/2033 | |
| 03/05/2027 | | 11/06/2028 | | 18/04/2031 | | 29/10/2033 | | 26/03/2036 | |
| चंद्र | 19/11/2025 | मंगल | 26/05/2027 | राहु | 14/11/2028 | गुरु | 19/08/2031 | बुध | 02/03/2034 |
| मंगल | 22/12/2025 | राहु | 26/07/2027 | गुरु | 01/04/2029 | शनि | 12/01/2032 | केतु | 23/04/2034 |
| राहु | 19/03/2026 | गुरु | 18/09/2027 | शनि | 13/09/2029 | बुध | 22/05/2032 | शुक्र | 16/09/2034 |
| गुरु | 04/06/2026 | शनि | 21/11/2027 | बुध | 08/02/2030 | केतु | 15/07/2032 | सूर्य | 30/10/2034 |
| शनि | 04/09/2026 | बुध | 17/01/2028 | केतु | 10/04/2030 | शुक्र | 17/12/2032 | चंद्र | 12/01/2035 |
| बुध | 25/11/2026 | केतु | 10/02/2028 | शुक्र | 30/09/2030 | सूर्य | 01/02/2033 | मंगल | 04/03/2035 |
| केतु | 28/12/2026 | शुक्र | 18/04/2028 | सूर्य | 21/11/2030 | चंद्र | 19/04/2033 | राहु | 14/07/2035 |
| शुक्र | 04/04/2027 | सूर्य | 08/05/2028 | चंद्र | 16/02/2031 | मंगल | 12/06/2033 | गुरु | 08/11/2035 |
| सूर्य | 03/05/2027 | चंद्र | 11/06/2028 | मंगल | 18/04/2031 | राहु | 29/10/2033 | शनि | 26/03/2036 |

| बुध - केतु | | बुध - शुक्र | | बुध - सूर्य | | बुध - चंद्र | | बुध - मंगल | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 26/03/2036 | | 24/03/2037 | | 23/01/2040 | | 28/11/2040 | | 29/04/2042 | |
| 24/03/2037 | | 23/01/2040 | | 28/11/2040 | | 29/04/2042 | | 27/04/2043 | |
| केतु | 17/04/2036 | शुक्र | 12/09/2037 | सूर्य | 07/02/2040 | चंद्र | 10/01/2041 | मंगल | 21/05/2042 |
| शुक्र | 16/06/2036 | सूर्य | 03/11/2037 | चंद्र | 04/03/2040 | मंगल | 09/02/2041 | राहु | 14/07/2042 |
| सूर्य | 04/07/2036 | चंद्र | 28/01/2038 | मंगल | 22/03/2040 | राहु | 28/04/2041 | गुरु | 31/08/2042 |
| चंद्र | 03/08/2036 | मंगल | 30/03/2038 | राहु | 08/05/2040 | गुरु | 06/07/2041 | शनि | 28/10/2042 |
| मंगल | 24/08/2036 | राहु | 01/09/2038 | गुरु | 18/06/2040 | शनि | 26/09/2041 | बुध | 18/12/2042 |
| राहु | 18/10/2036 | गुरु | 17/01/2039 | शनि | 06/08/2040 | बुध | 08/12/2041 | केतु | 08/01/2043 |
| गुरु | 05/12/2036 | शनि | 30/06/2039 | बुध | 19/09/2040 | केतु | 07/01/2042 | शुक्र | 09/03/2043 |
| शनि | 31/01/2037 | बुध | 23/11/2039 | केतु | 07/10/2040 | शुक्र | 04/04/2042 | सूर्य | 27/03/2043 |
| बुध | 24/03/2037 | केतु | 23/01/2040 | शुक्र | 28/11/2040 | सूर्य | 29/04/2042 | चंद्र | 27/04/2043 |

| बुध - राहु | | बुध - गुरु | | बुध - शनि | | केतु - केतु | | केतु - शुक्र | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 27/04/2043 | | 13/11/2045 | | 19/02/2048 | | 29/10/2050 | | 27/03/2051 | |
| 13/11/2045 | | 19/02/2048 | | 29/10/2050 | | 27/03/2051 | | 26/05/2052 | |
| राहु | 13/09/2043 | गुरु | 03/03/2046 | शनि | 24/07/2048 | केतु | 07/11/2050 | शुक्र | 06/06/2051 |
| गुरु | 16/01/2044 | शनि | 13/07/2046 | बुध | 10/12/2048 | शुक्र | 02/12/2050 | सूर्य | 28/06/2051 |
| शनि | 11/06/2044 | बुध | 07/11/2046 | केतु | 05/02/2049 | सूर्य | 09/12/2050 | चंद्र | 02/08/2051 |
| बुध | 21/10/2044 | केतु | 25/12/2046 | शुक्र | 19/07/2049 | चंद्र | 22/12/2050 | मंगल | 27/08/2051 |
| केतु | 14/12/2044 | शुक्र | 12/05/2047 | सूर्य | 06/09/2049 | मंगल | 30/12/2050 | राहु | 30/10/2051 |
| शुक्र | 19/05/2045 | सूर्य | 22/06/2047 | चंद्र | 27/11/2049 | राहु | 22/01/2051 | गुरु | 26/12/2051 |
| सूर्य | 04/07/2045 | चंद्र | 30/08/2047 | मंगल | 24/01/2050 | गुरु | 10/02/2051 | शनि | 02/03/2052 |
| चंद्र | 20/09/2045 | मंगल | 18/10/2047 | राहु | 20/06/2050 | शनि | 06/03/2051 | बुध | 01/05/2052 |
| मंगल | 13/11/2045 | राहु | 19/02/2048 | गुरु | 29/10/2050 | बुध | 27/03/2051 | केतु | 26/05/2052 |

# शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

| | |
|---|---|
| मूलांक | 1 |
| भाग्यांक | 9 |
| मित्र अंक | 1, 4, 8, 9 |
| शत्रु अंक | 3, 5, 6 |
| शुभ वर्ष | 19,28,37,46,55 |
| शुभ दिन | शुक्र, शनि, मंगल |
| शुभ ग्रह | शुक्र, शनि, मंगल |
| मित्र राशि | वृष, तुला |
| मित्र लग्न | वृष, तुला, धनु |
| अनुकूल देवता | कुबेर |
| शुभ रत्न | नीलम |
| शुभ उपरत्न | जमुनिया, बिलौर |
| भाग्य रत्न | हीरा |
| शुभ धातु | लौह |
| शुभ रंग | काला |
| शुभ दिशा | पश्चिम |
| शुभ समय | संध्या |
| दान पदार्थ | कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह |
| दान अन्न | उड़द |
| दान द्रव्य | तेल |

# रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

| रत्न | ग्रह | शुभता | क्षेत्र |
|---|---|---|---|
| हीरा | शुक्र | 94% | स्वास्थ्य, सुख, भाग्योदय |
| मूंगा | मंगल | 92% | व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम |
| लहसुनिया | केतु | 83% | भाग्योदय, स्वास्थ्य |
| पुखराज | गुरु | 78% | स्वास्थ्य, धनार्जन, धन |
| नीलम | शनि | 75% | व्यावसायिक उन्नति, कम खर्च, स्वास्थ्य |
| पन्ना | बुध | 73% | स्वास्थ्य, सन्तति सुख, दुर्घटना से बचाव |
| गोमेद | राहु | 58% | पराक्रम, व्यावसायिक उन्नति |
| मोती | चंद्र | 38% | रोग, शत्रु व रोग |
| माणिक्य | सूर्य | 19% | व्यय, दाम्पत्य कष्ट |

रत्न की शुभता

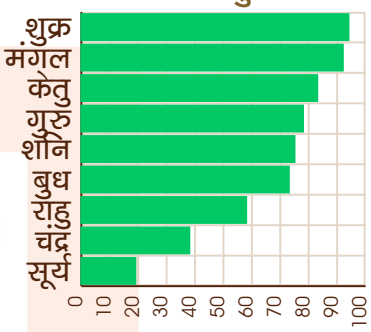


## दशानुसार रत्न विचार

| दशा | समाप्ति | माणिक्य | मोती | मूंगा | पन्ना | पुखराज | हीरा | नीलम | गोमेद | लहसुनिया |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| राहु | 29/10/1998 | 0% | 12% | 79% | 73% | 78% | 100% | 81% | 70% | 70% |
| गुरु | 29/10/2014 | 31% | 50% | 98% | 61% | 91% | 81% | 75% | 58% | 83% |
| शनि | 29/10/2033 | 0% | 12% | 79% | 80% | 78% | 100% | 88% | 64% | 70% |
| बुध | 29/10/2050 | 31% | 12% | 92% | 86% | 78% | 100% | 75% | 58% | 83% |
| केतु | 29/10/2057 | 0% | 12% | 98% | 73% | 78% | 100% | 62% | 41% | 95% |
| शुक्र | 29/10/2077 | 0% | 12% | 92% | 80% | 78% | 100% | 81% | 64% | 89% |
| सूर्य | 29/10/2083 | 44% | 50% | 98% | 73% | 84% | 81% | 62% | 41% | 70% |
| चंद्र | 29/10/2093 | 31% | 56% | 92% | 80% | 78% | 94% | 75% | 41% | 70% |
| मंगल | 30/10/2100 | 31% | 50% | 100% | 61% | 84% | 94% | 75% | 41% | 89% |

# साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

### प्रथम चक्रः

| | | | |
|---|---|---|---|
| साढेसाती प्रथम ढैया | 21/03/1990-20/06/1990 | 15/12/1990-05/03/1993 | 15/10/1993-10/11/1993 |
| साढेसाती द्वितीय ढैया | 05/03/1993-15/10/1993 | 10/11/1993-02/06/1995 | 10/08/1995-16/02/1996 |
| साढेसाती तृतीय ढैया | 02/06/1995-10/08/1995 | 16/02/1996-17/04/1998 | ---------- |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | 07/06/2000-23/07/2002 | 08/01/2003-07/04/2003 | ---------- |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | 10/09/2009-15/11/2011 | 16/05/2012-04/08/2012 | ---------- |

### द्वितीय चक्रः

| | | | |
|---|---|---|---|
| साढेसाती प्रथम ढैया | 24/01/2020-29/04/2022 | 12/07/2022-17/01/2023 | ---------- |
| साढेसाती द्वितीय ढैया | 29/04/2022-12/07/2022 | 17/01/2023-29/03/2025 | ---------- |
| साढेसाती तृतीय ढैया | 29/03/2025-03/06/2027 | 20/10/2027-23/02/2028 | ---------- |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | 08/08/2029-05/10/2029 | 17/04/2030-31/05/2032 | ---------- |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | 22/10/2038-05/04/2039 | 13/07/2039-28/01/2041 | 06/02/2041-26/09/2041 |

### तृतीय चक्रः

| | | | |
|---|---|---|---|
| साढेसाती प्रथम ढैया | 06/03/2049-10/07/2049 | 04/12/2049-25/02/2052 | ---------- |
| साढेसाती द्वितीय ढैया | 25/02/2052-14/05/2054 | 02/09/2054-05/02/2055 | ---------- |
| साढेसाती तृतीय ढैया | 14/05/2054-02/09/2054 | 05/02/2055-07/04/2057 | ---------- |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | 27/05/2059-11/07/2061 | 13/02/2062-07/03/2062 | ---------- |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | 30/08/2068-04/11/2070 | ---------- | ---------- |

### शनि का ढैया फल

| ढैया के प्रकार | फल | क्षेत्र |
|---|---|---|
| साढेसाती प्रथम ढैया | सम | कम खर्च |
| साढेसाती द्वितीय ढैया | शुभ | स्वास्थ्य |
| साढेसाती तृतीय ढैया | सम | धन |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | शुभ | सुख |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | अशुभ | दुर्घटना से बचाव |

# साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

**ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।**

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।**
**उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

**ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।**

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

**ऊँ शं शनैश्चराय नमः।**

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

# मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।**
**स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

**********

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति दशम भाव है। दशम भाव कर्म का मुख्य प्रतिनिधि भाव है। अतः इसके प्रभाव से आप एक कर्मठ एवं पराक्रमी महिला होंगी तथा अपने कार्य क्षेत्र में हमेशा उन्नतिशील रहेंगी। साथ ही अपनी बुद्धि एवं योग्यता के बल पर आप (या आपके पति) किसी उच्च प्रशासानिक पद, इंजीनियरिंग, मेडिकल अथवा होटल प्रबन्ध आदि के क्षेत्र में विशिष्ट सफलता अर्जित करेंगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे जिससे समाज में आप एक आदरणीया महिला समझी जाएंगी। आप अपने कार्यों से विशिष्ट सम्मान या उपलब्धि भी अर्जित कर सकती हैं। जिससे आपकी ख्याति भी दूर दूर तक फैलेगी। पिता के सुख एवं स्वास्थ्य के लिए यह स्थिति मध्यम रहेगी। तथापि वे भी समाज में आदरणीय रहेंगे तथा उनकी सेवा तथा सुख प्रदान करने में आप हमेशा तत्पर रहेंगी।

दशम भाव से मंगल की दृष्टि प्रथम भाव पर रहेगी इसके प्रभाव से आप यदा कदा पित या गर्मी आदि से कष्ट की अनुभूति कर सकती हैं लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। सामान्यतया आप उत्साह एवं परिश्रम पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगी। चतुर्थ भाव पर सप्तम दृष्टि के प्रभाव से आप जीवन में आवश्यक सुख संसाधनों को अर्जित करेंगी। सुख पूर्वक उनका उपभोग भी करेंगी। जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से भी आप युक्त रहेगी परन्तु माता का सुख एवं स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। आप अपनी ओर से उन्हें पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। पंचम भाव पर मंगल दृष्टि से संतति से सुख एवं सहयोग मध्यम रहेगा तथा संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब भी हो सकता है। यदा कदा बुद्धि में उग्रता का भाव भी उत्पन्न होगा लेकिन अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को बुद्धिमत्ता पूर्वक सम्पन्न करेंगी। इसके अतिरिक्त सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपको लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा।

इस प्रकार दशमस्थ मंगल के प्रभाव से आप एक पराक्रमी एवं प्रभावी महिला होंगी तथा जीवन में धनऐश्वर्य एवं सुख संसाधनों से युक्त रहेगी। अतः आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा पारिवारिक जनों का आधुनिक परिवेश में पालन करने में आप समर्थ रहेंगी जिससे सभी लोग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। आपको सहयोग तथा सम्मान प्रदान करेंगे।

# कालसर्प योग

**अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।**
**योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।**

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

## काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

## जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में वासुकि नामक काल सर्प योग है एवं राहु से केतु तक सभी भाव ग्रहों से पूर्ण है। फलस्वरूप जातक का वैवाहिक जीवन विशेष रूप से कष्टमय व्यतीत होता है तथा पारिवारिक सदस्यों से मतान्तर रहता है और भाई-बहनों से नुकसान उठाना पड़ता है। रिश्तेदार समय पर धोखा दे जाते हैं। मित्रगण भी समय पर काम नहीं आते। घर में सुख शान्ति का अभाव रहता है। भाग्योदय होने में अनेक समस्याएँ उपस्थित होती हैं। नौकरी-व्यवसाय में विशेष रूप से संघर्ष करना पड़ता है। जातक को राजकीय सेवा का अवसर मिलता है। यश, पराक्रम में न्यूनता रहती है। जातक को पद प्रतिष्ठा प्राप्त करने में विशेष रूप से संघर्ष करना पड़ता है और उसमें केवल कष्ट उठाना पड़ता है। इस योग के कारण जातक को समय-समय पर रोग व्याधि ग्रसित करता रहता है। जिसमें अधिक धन खर्च हो जाने के कारण आर्थिक विपन्नता आ जाती है। यहाँ तक कि सुदामा जैसी निर्धनता घेर लेती है। चन्द्रमा के प्रभावित होने के कारण जातक मानसिक रूप से अशान्त रहता है।

इस योग के कारण जातक को धार्मिक कार्यों में रुचि का अभाव रहता है। केस मुकदमा जातक को घेरे रहती है जिस कारण जातक को न्यायालय की शरण में जाना पड़ता है। फलस्वरूप जातक को केवल नुकसान ही उठाना पड़ता है। राज्य पक्ष से प्रतिकूलता रहती है और नौकरी व्यावसाय आदि के क्षेत्र में निलम्बन या नुकसान पाता है। लेकिन इतना सब कुछ होने के बाद भी जातक को विलम्ब से उत्तम भाग्य का निर्माण होता है और उन्नति के कई अवसर प्राप्त होते हैं।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. रसोई घर में बैठकर भोजन करें।
3. श्रद्धापूर्वक पितरों का प्रतिवर्ष श्राद्धपक्ष में श्राद्ध करें। कम से कम 7 वर्ष तक अवश्य करें।
4. पलाश के फूल गोमूत्र में कूटकर छांव में सुखावें। उसका चूर्ण बनाकर नित्य स्नान की बाल्टी में यह चूर्ण डालें। इस प्रकार 72 बुधवार (डेढ़ वर्ष) तक स्नान करें।
5. नवनाग स्तोत्र का प्रतिदिन पाठ करें।
6. हर पुष्य नक्षत्र को महादेव पर रूद्री से अभिषेक करें तथा जल दुग्ध समर्पित करें।
7. शुभ मुहूर्त्त में चाँदी का नाग बनाकर अंगुली में धारण करें।
8. इलाहाबाद (प्रयाग) में संगम पर नाग-नागिन का विधिवत पूजन कर दुग्ध के साथ, संगम में प्रवाहित करे एवं तीर्थराज प्रयाग संगम स्थल में तर्पण श्राद्ध भी एक बार करें।
9. सर्प के वैदिक मन्त्र. का जप करना या ब्राह्मण द्वारा कराना चाहिए। विधिवत नाग की

पूजोपरान्त मन्त्र का जप करें। मन्त्र है-

ऊँ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु।
ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।।

इस मन्त्र का 31,000 (इकत्तीस हजार) जप करें। परन्तु कलियुग में सवालाख जप का विधान है। जप के उपरान्त होम आदि के तदनन्तर सर्प को जल में प्रवाहित करें।

10. सरस्वती जी की एक वर्ष तक विधिवत उपासना करें।

11. शुभ मुहूर्त्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वास्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।

12. गोमेद, सीसा, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कंबल आदि समय-समय पर दान करें।

13. शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से यह व्रत आरंभ करना चाहिए। यह व्रत 18 करें। काला वस्त्र धारण करके 18 या 3 बीज मन्त्र की माला जपें। तदन्तर एक बर्तन में जल, दूर्वा और कुश लेकर पीपल की जड़ में डालें। भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी समयानुसार रेवड़ी, भुग्गा, तिल के बने मीठे पदार्थ सेवन करें और यही दान में भी दें। रात को घी का दीपक जलाकर पीपल की जड़ में रख दें।

14. श्रीमद् भागवत के दशमस्कन्ध के षोडश अध्याय (16) में आये श्लोकों का 108 बार पाठ करें।

15. मंगलवार एवं शनिवार के रामचरितमानस के सुन्दरकाण्ड का 108 बार पाठ श्रद्धापूर्वक करें।

16. शुभ मुहूर्त में सर्वतो भद्रमण्डल यन्त्र को पूजित कर धारण करें।

स्त्री जातक के लिए विशेष - अश्वत्थ (वट) के वृक्ष से नित्य 108 प्रदक्षिणा (फेरे) करें। तीन सौ दिन में जब 28,000 प्रदक्षिणा पूरी होगी तो दोष दूर होकर स्वतः ही सन्तति की प्राप्ति होगी।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

# पितृदोष विचार

## पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

## पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

## पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

## पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

**ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।**
**नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

## पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

## आपकी कुण्डली में पितृदोष

आपकी कुडली में किसी भी प्रकार का पितृदोष विद्यमान नहीं है, अतः आपको जीवन में पितृदोष के कारण कष्ट या परेशानी नहीं होगी।

## नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

# ग्रह फल

## सूर्य

बारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक वाम नेत्र तथा मस्तक रोगी ,आलसी, उदासीन, परदेशवासी, मित्र-द्वेषी एवं कृश शरीर होता है।

मकर राशि में रवि हो तो जातक बहुभाषी, चंचल, झगड़ालू, दुराचारी, लोभी एवं परिश्रमी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी सहायता करते रहेंगे। साथ ही उनकी प्रवृति पुण्य एवं दान संबंधी कार्यों को करने की रहेगी अतः आपको भी वे पुण्य कार्यों की ओर प्रेरित करेंगे। साथ ही धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण आदर की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों से संबंधों में कटुता या तनाव उत्पन्न होगा परन्तु कुछ समय के बाद स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। जीवन में आप उनके सुख दुःख का भी ध्यान रखेंगी एवं समयानुसार उनको पूर्ण सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कोई कष्ट नहीं होने देंगी।

## चन्द्र

लग्न (प्रथम) में चन्द्रमा हो तो जातक बलवान्, सुखी, स्थूलशरीर, गान वाद्य प्रिय, ऐश्वर्यशाली, व्यवसायी, उदार, धनी एवं विद्वान होता है।

कुम्भ राशि में चन्द्रमा हो तो जातक, उन्मत, सूक्ष्मदेही, शिल्पी, नीति दक्ष, दूरदर्शी, विद्वान्, गुप्तविद्याओं में रुचि, अच्छा अन्तर्ज्ञान, साधना करने वाला, धार्मिक प्रवृत्ति वाला एवं मध्यावस्था में संन्यास के प्रति झुकाव होता है।

आप के जन्म समय में चन्द्रमा लग्न में विद्यमान हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से उन्हें लम्बी आयु की प्राप्ति होगी। आपके जन्म के उपरान्त वे धन सम्पत्ति को भी प्राप्त करने में सफल होगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह एवं वात्सल्य रहेगा तथा जीवन के सभी शुभ एवं महत्व पूर्ण कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। इसके साथ ही आप के परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं मतभेदों की प्रायः अल्पता ही रहेगी।

आप भी उनके प्रति मन में पूर्ण सम्मान तथा आदर का भाव रखेंगी तथा उनकी आज्ञा पालन करने के लिए प्रायः तत्पर रहेंगी। इससे आप लोगों का एक दूसरे के प्रति विश्वास आदि में वृद्धि होगी जिससे आजीवन मधुर संबंध बने रहेंगे। इससे आप परस्पर सहयोग भाव से

जीवन में प्रसन्नता की प्राप्ति करेंगी।

## मंगल

दसवें भाव में मंगल हो तो जातक कुलदीपक, स्वाभिमानी, सन्तति कष्टवाला, धनवान्, सुखी, उत्तम-वाहनों से सुखी एवं यशस्वी होता है।

वृश्चिक राशि में मंगल हो तो जातक नीति-दक्ष, अच्छी स्मरण शक्ति ईर्ष्यालु स्वभाववाला, बहुतहठी, अभिमानी, चोरों का नेता, पातकी एवं दुराचारी होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा उनमें शारीरिक दुर्बलता भी परिलक्षित होगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त महत्वपूर्ण कार्य की सिद्धि में आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी वे आपके साथ रहेंगे। तथा नौकरी या व्यापारादि में आपका सहयोग करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति स्नेह का भाव रहेगा एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी। लेकिन कभी कभी आपसी मतभेदों के कारण इसमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अल्प समय तक रहेगी। साथ ही आप उनकी आजीविका संबंधी कार्यों में में यथाशक्ति आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करती रहेंगी।

## बुध

लग्न (प्रथम) में बुध हो तो जातक आस्तिक, गणितज्ञ, दीर्घायु, उदार-विनोदी, वैद्य, विद्वान, स्त्रीप्रिय, मितव्ययी एवं मधुरभाषी होता है।

कुम्भ राशि में बुध हो तो जातक कुटुम्बहीन, दुःखी, अल्पधनी, झगड़ालू, प्रसिद्ध निर्बल स्वास्थ्य एवं प्रगति करने वाला होता है।

## गुरु

लग्न (प्रथम) में गुरु हो तो जातक विद्वान् दीर्घायु, ज्योतिषी कार्यपरायण, लोकसेवक, तेजस्वी, प्रतिष्ठित, स्पष्टवक्ता, स्वाभिमानी, सुन्दर, सुखी, विनीत, पुत्रवान् धनवान्, राज्यमान, सुन्दर एवं धर्मात्मा होता है।

कुम्भ राशि में गुरु होतो जातक विद्वान परन्तु धनहीन, लोकप्रिय, मिलनसार, स्वप्नों के जगत में विचार करने वाला डरपोक प्रवासी, कपटी एवं रोगी होता है।

## शुक्र

लग्न (प्रथम) में शुक्र हो तो जातक सुन्दरदेही, दीर्घायु, राजप्रिय, कामी, उच्चसरकारी पद पर आसीन, विलासी, भोगी, विद्वान्, प्रवासी, मधुरभाषी, प्रसिद्ध सुखी एवं ऐश्वर्यवान् होता है।

कुम्भ राशि में शुक्र हो तो जातक शान्तिप्रिय, दूसरों को सहायता करने वाला, सच्चरित्र, सुन्दर, लोकप्रिय, चिन्ताशील एवं रोग से सन्तप्त होता है।

## शनि

दशम भाव में शनि हो तो जातक विद्वान, ज्योतिषी, राजयोगी ,न्यायी, नेता, धनवान्, राजमान्य, उदरविकारी, अधिकारी, चतुर, भाग्यवान् परिश्रमी, निरुद्पयोगी एवं महत्त्वाकांक्षी होता है।

वृश्चिक राशि में शनि हो तो जातक संकीर्ण विचारों वाला, हिंसक, कठोरघ्दय, उतावला, कमजोर स्वास्थ्य, बुरी आदतें, दुःखी, विष से खतरा, निर्धन स्त्रीहीन, क्रोधी, कठोर एवं लोभी होता है।

## राहु

तृतीय भाव में राहु हो तो जातक योगाभ्यासी, विद्वान्, व्यवसायी, पराक्रमशून्य, दृढ़विवेकी, अरिष्टनाशक, प्रवासी, दीर्घायु एवं बलवान् होता है।

मेष राशि में राहु हो तो जातक-पराक्रमहीन, आलसी, अविवेकी एवं अनैतिक चरित्र होता है।

## केतु

नवम भाव में केतु हो तो जातक सुखाभिलाषी, व्यर्थपरिश्रमी अपयशी, दुःखी एवं 48 वर्ष के बाद भाग्योदय होता है।

तुला राशि में केतु हो तो जातक कुष्ठरोगी, दुःखी, क्रोधी एवं कामी होता है।

# दशा विश्लेषण

## महादशा :- शनि
## ( 29/10/2014 - 29/10/2033 )

शनि की महादशा उन्नीस वर्ष की है। आपके जीवन में यह 29/10/2014 को आरम्भ और 29/10/2033 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में शनि दशम भाव में स्थित है। यह स्वभाव से एक अशुभ ग्रह है, किन्तु अत्यन्त शक्तिशाली है और शुभ-अशुभ दोनों का कार्य करता है। इसे बाधक ग्रह कहा जाता है जो जातक के धैर्य की परीक्षा लेता है। फल की प्राप्ति में यह विलम्ब करता है, पर उससे वंचित नहीं करता । यह जातक को लक्ष्य की पूर्ति के लिए कठिन परिश्रम करने को प्रेरित करता है। आपकी जन्मकुण्डली में दशम भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि 12 वें, 4 थे तथा 7 वें भाव पर है और यह इन भावों के कार्य को प्रभावित कर रहा है। दशम भाव, जिसमें यह स्थित है, प्रतिष्ठा, सामाजिक सम्मान, सफलता, आदर, ख्याति, उत्तरदायित्व, सांसारिक गतिविधि, पदोन्नति, प्रगति, उच्च पद, सरकार से सम्मान का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

इस महादशा के दौरान आपको स्वास्थ्य सम्बन्धी कोई गम्भीर समस्या नहीं होगी, न ही कोई गम्भीर बीमारी या दुर्घटना होगी और आप सामान्यतया कार्यों को पूरा करने की स्थिति में होंगे। किन्तु, आपको कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाने के प्रति सतर्क तथा सावधान रहने की सलाह दी जाती है क्योंकि नीच का शनि मस्तिष्क को प्रभावित करता है।

धन सम्पत्ति :

दशम अर्थात् व्यवसाय व जीविका के भाव में स्थित शनि की 12वें भाव पर दृष्टि है। इसलिए आपको चल-अचल सम्पत्ति में वृद्धि के प्रति सतर्क रहना चाहिए क्योंकि कुछ हानि की सम्भावना है।

व्यवसाय :

शनि दशम भाव में स्थित है और उसे शक्ति प्रदान कर रहा है। आपको आधिकारिक पद की प्राप्ति की सम्भावना है। इस दशा के दौरान आप शासक हो सकते हैं-अथवा आपको मन्त्री पद की प्राप्ति हो सकती है। आप अपने प्रभुत्व तथा सेवा का प्रदर्शन करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

दशम भाव से शनि की 12वें, 4थे तथा 7वें भावों अर्थात् शयन स्थान, 'शुभस्थान' और जीवनसाथी के भावों पर दृष्टि के फलस्वरूप आपको एक सुन्दर तथा सहायक जीवन साथी की प्राप्ति होगी, किन्तु, जीवन में विवाद हमेशा होते रहेंगे जिससे आपको मानसिक अशान्ति तथा निराशा बनी रहेगी।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

शनि की दशा के दौरान आप निराश रहेंगे, आप में नकारात्मक भावना उत्पन्न

होगी और आपकी शिक्षा में बाधाएं आएंगी।

## अंर्तदशा :- शनि - चन्द्र
## ( 01/10/2025 - 03/05/2027 )

शनि महादशा में चंद्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 7 मास की होगी। आपके लिए यह 29/10/2014 को प्रारंभ होकर 29/10/2033 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में प्रथम भाव में स्थित है। प्रथम भाव शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है। चंद्र शक्तिशाली ग्रह है। प्रथम भाव में स्थित होकर चन्द्रमा आपकी कुंडली के सप्तम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप घर और माता से घनिष्ठ रहेंगे। मन और माता का कारक चंद्रमा लग्न में स्थित होने के कारण आप अत्यधिक संवेदनशील और मूडी रहेंगे। इस कारण कार्यों में बाधाएं आ सकती हैं। कार्यों में देरी होगी, मगर पूरे अवश्य होंगे।

आपके मधुर व्यवहार के कारण जीवनसाथी और व्यापार में साझेदार का सहयोग मिलता रहेगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए चंद्रमा के वैदिक मंत्र के 11000 जाप करें।

## अंर्तदशा :- शनि - मंगल
## ( 03/05/2027 - 11/06/2028 )

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है जो आपके लिए 29/10/2014 को प्रारंभ होकर 29/10/2033 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल की अंतर्दशा 1 वर्ष 1 मास की होगी जो आपके लिए 03/05/2027 को प्रारंभ होकर 11/06/2028 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है। दशम भाव में स्थित होकर मंगल आपकी कुंडली के 1, 4, 5 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपको प्रत्येक कार्य में बाधाओं का सामना करना पड़ेगा, मगर धन खूब कमाएंगे और धनी बनेंगे। उच्चपद पर आसीन हो सकते हैं, मगर जल्दबाज और प्रशंसापसंद हो सकते हैं। वाहन सुख रहेगा। विज्ञान और तकनीकी में दक्ष बनेंगे। अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे।

अरिष्ट से बचाव के लिए 6 रत्ती का मूंगा चांदी की अंगूठी में कच्चे दूध से धोकर, मंगलवार के दिन प्रातःकाल में हनुमानजी, गणेशजी और शिवजी की उपासना के उपरांत धारण करें।

## अंर्तदशा :- शनि - राहु
## ( 11/06/2028 - 18/04/2031 )

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 29/10/2014 को प्रारंभ होकर 29/10/2033 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु की अंतर्दशा 2 वर्ष 10 मास की होगी जो आपके लिए 11/06/2028 को प्रारंभ होकर 18/04/2031 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है। राहु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है। इसे अशुभ समझा जाता है पर यह स्थिति के अनुसार शुभ/अशुभ होता है।

इस अवधि में आपके प्रत्येक विषय में स्वतंत्र विचार होंगे। इस कारण आपको आलोचना का शिकार होना पड़ सकता है। अचानक कोई अप्रत्याशित समाचार सुनने को मिल सकता है। इसके लिए आप बाहरी तौर पर गंभीर बने रहेंगे मगर घर से दूर जा सकते हैं। तृतीय भाव में स्थित राहु के कारण भाई, बहनों आदि का व्यवहार आपके प्रति नकारात्मक हो सकता है अतः सावधान रहना श्रेयस्कर होगा।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए राहु के वैदिक मंत्र के 18000 जाप करें।